© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 03 , Issue : 11 | October – December 2017

बालकों में भाषिक विकास

प्रोमिला, Net Qualified 2016

'बाल्यावस्था जीवन की आधारभूत अवस्था है।' जीवन के शुरू के वर्षों में अभिवृत्तियों, आदतों और व्यवहार के प्रकार पक्के हो जाते हैं। बालरूप की शक्ति यही है जिसका अनुभव हम काव्य, संगीत, चित्रा एवं मूर्ति में करते हैं। भारतीय दृष्टि बाल–सौंदर्य की अनुभूति में रूप की पूर्णता उसकी शक्ति का स्रोत एवं स्वरूप है वह रूप, जिसकी पूर्णता में प्रत्येक अंग अपने प्रभाव के साथ, संगीत में संवादी स्वर की भांति, अंगी में समरस हो जाता है संतुलन, सामंजस्य आदि रूप संपदा इतनी पूर्ण कि कुछ भी चाहने को शेष नहीं रूप एवं रूपित, बाह्य और आभ्यंतर, शरीर एवं आत्मा का ऐसा आश्चर्यजनक अभेद जिसमें सारे के सारे भेद गल गए हैं, समय की सीमा समाप्त और जीवन के अंतराल में महाकाल के लय की अनुभूति बाल–सौंदर्य द्वारा उन्मीलित लोक में सत्य प्रमाणित होती है। अंतर्मन के ज्योतिर्लोक में अभूतपूर्व ज्योतियों का प्रकाश, अनुभूत आनंदों की अनुभूति, अदृष्ट दिशाओं का उन्मीलन, सद्यः प्रसूत रस–गंध–स्पर्श रूप–ध्वनि का प्रवाह और अंत में, अपने ही भीतर एक नूतन, आनंद–विभोर, प्रभाओं से पोषित, मानव के आविर्भाव की जाग्रत अनुभूति बाल–रूप में होती है, चाहे वह सूर का बाल रूप कृष्ण, तुलसी का बाल रूप राम–लक्ष्मण का प्रत्येक घर परिवार में जन्मा सामान्य बाल–रूपा।

बाल–अनुभूति धूप सी सरल, स्पष्ट और सत्य होती है, और सरल का विश्लेषण नहीं होता। बालरूप के जादू को हम सब जानते हैं। बालरूप सक्रिय तत्व है और मन के मनोहर, मोहक भागों के लिए अभिव्यक्ति की भाषा। बालरूप बोलता है, और अव्याज मनोहर रूप तो निर्मल, निष्कलुष आत्मा की वाणी है। बाल रूप बताता ही नहीं, वह अपने संकेतों, ध्वनियों, अंतर में अनुरणन पैदा करने की शक्ति से जताता भी बहुत कुछ है। यह कभी दृढ़ आत्मा को अपने कलेवर की गरिमा से प्रकट करता है, कभी गति से काल की लय और जीवन की ऊर्जाओं, को कभी मन के सुकुमार भावों को तो कभी आत्मा के मुक्त आनंद को। बालरूप अभिव्यक्ति के लिए समर्थ माध्यम होने के कारण व्यापक तत्व हैं। जहाँ भी निर्माण, नियोजन, सृजन, व्यवस्था, विन्यास, सन्निवेश, लय गति मुक्त उतार–चढ़ाव, सज्जा, वेश–भूषा, अलंकरण और वृरतित्व की कोई विद्या, श्रृंगार की रूचि तथा अभिनव और अभिराम के लिए प्रस्ताव, वहाँ–वहाँ बाल रूप है। मन आश्चर्य से भर जाता है, आहलाद से रोमांचित हो जाता है। रग–रग और रोम–रोम में रोमांच और आनंद की हिलोर उठती है। कहीं–कहीं बालरूप इतना बहुल और महनीय हो उठता है कि वह अपने ही बंधनों को तोड़कर वह उठता है।

बाल क्रीड़ाओं में संभूत मचलती, मदमाती, इठलाती गतियों का वैभव–विलास है। बाल–नृत्य में गति की लोच और उसका स्पंदन आँखों के आगे उतर आते हैं। भुवन के समूचे विन्यास में ऊर्ध्वाधर गतियाँ अपने संपूर्ण वैभव के साथ मानो गहकर ग्रथित कर दी जाती हैं अभिव्यक्ति का कोई क्षेत्रा नहीं जहाँ गति न हो। व्यक्ति में गर्भागमन के क्षण से मृत्यु तक हमेशा परिवर्तन होता रहता है, वह कभी एक–सा नहीं रहता। शैशवास्था और बाल्यावस्था भर उसकी शारीरिक और बौद्धिक उन्नति होती रहती है, जो कि युवावस्था की ओर बढ़ने की निशानी है। बालक वस्तुतः एक व्यक्ति ही है। इसमें एक ओर माता के गर्भस्थ भ्रूण के अतीत के संस्कार हैं तो दूसरी ओर उसमें भविष्य का बालक, किशोर तथा प्रौढ़ व्यक्ति की संकल्पना छिपी है। महाभारत कालीन शोधों में पता लग चुका था कि गर्भावस्था में भ्रूण सीखता है। इस तथ्यात्मक सत्य की पुष्टि 1984 में अमरीकी मनोवैज्ञानिकों ने अपने शोधों के माध्यम से की है।

चिकित्सा विज्ञान एवं मनोविज्ञान के संयुक्त प्रयासों से इस दिशा में अन्य अन्वेषणात्मक तथ्य सामने आ रहे हैं। मनोविज्ञान वस्तुतः एक अंतरविज्ञानीय क्षेत्र है। 1940 के अंत में भाषाविज्ञानी भाषार्जन की जिज्ञासाओं के लिए उत्पादन और बोधन के रहस्य समझने के लिए मनोविज्ञान की ओर झुके। 1950 में थामस सीबक और चार्ल्स आसगुड ने मिलकर भाषाविज्ञान और मनोविज्ञान के बीच अंतः क्रियाओं के लिए एक समिति की स्थापना की। भाषाविज्ञान यदि भाषा की भाषाई व्यवस्था का वैज्ञानिक सिद्धान्त है तो मनोविज्ञान मानसिक प्रक्रियाओं के भाषाई ज्ञान का सिद्धाता मनो भाषाविज्ञान इन दोनों का समन्वित उपागम है। वस्तुतः मनो भाषाविज्ञान का उद्देश्य इस तथ्य को स्पष्ट करना है कि भाषाई ज्ञान संज्ञानात्मक व्यवस्थाओं में किस प्रकार द्योतित होता है। साथ ही, वह इन मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं की ओर संकेत करता है जो इसका उपयोग करती है। भाषा सिद्धांत तथा अधिगम सिद्धांत परस्पर संब होकर भाषा–अधिगम के सिद्धांतों का गठन करते हैं। मनोभाषा विज्ञान का मुख्य कार्य उन समस्त मानसिक प्रक्रियाओं का विवेचन करना है, जो भाषा ज्ञान, भाषा संप्राप्ति और भाषा–व्यवहार से संबंध है। भाषा–अर्जन में बालक क्या अर्जित करता है, किस प्रकार अर्जित करता है तथा संदेशों के बोधन एवं अभिव्यक्ति में इनका किस प्रकार उपयोग करता है आदि प्रमुख हैं। ए.आर.डीबोल्ड के अनुसार, 'मनोविज्ञान मुख्य रूप में संदेशों और मानव व्यक्तियों की विशेषताओं के मध्य संबंधों से सब है, जो इस संदेश का चयन और व्याख्या करते हैं। पॉल फ्रीज के अनुसार 'मनोभाषाविज्ञान हमारी अभिव्यक्ति की आवश्यकताओं और संप्रेषण के बीच संबंधों का अध्ययन है और हमारे बाल्यकाल या बाद में सीखी गई भाषा द्वारा प्रदत्त माध्यम से सब है।'

संप्रेषण की प्रक्रिया

मनोभाषाविज्ञान को संप्रेषण की क्रिया को ध्यान में रखना होता है। वक्ता और श्रोता अपने संदेश को जिस स्थिति में रखता है उसका प्रतिबिंब भी वहीं दर्शाता है। इस अवस्था में मनो भाषाविज्ञान दो दिशाओं में कार्य करता है

1. मनोविज्ञान वक्ता और श्रोता की प्रक्रिया की व्यवस्था, संकेतन और विसंकेतन, मानसिक स्थिति जो भाषा के उत्पादन में सहयोग करता है। साथ ही, यह सामाजिक या व्यक्तिगत समूहों के बीच संबंधों के मानसिक प्रभाव का भी अध्ययन करता है।
2. भाषाविज्ञान भाषा के इन पक्षों का अध्ययन करता है कोड की सामान्य व्यवस्था, संदेश के घटक और इनके कोड की रूपावली की व्यवस्था, संयोजक अनुक्रम की प्रकारता और वाक्य विन्यासात्मक व्यवस्था की 'गतिकी' एवं भाषा का उद्भवा मनोभाषाविज्ञान के सामने कुछ विचारणीय समस्याएँ है, जिनके विश्वसनीय समाधान में मनोभाषाविद लगे हुए हैं;

क. बालक अपनी मातृभाषा कैसे सीखता है ?
ख. बाल भाषा और व्यस्क भाषा में क्या अंतर है ? पहली दूसरी में कैसे बदलती है ?
ग. भाषा अधिगम सार्वभौमिक है तब भी यह पता लगाना कि इसका अधिगम कैसे होता है ?
घ. भाषिक रूप से अर्जित की गई और संवेदनात्मक रूप से उत्पन्न भाषा की इकाई में क्या संबंध है ?
ड. वाक्यों का उत्पादन कैसे होता है और वे कैसे समझे जाते हैं ?

बालक के विकास का एक निश्चित क्रम है जिसमें डिंब, पिंड, भ्रूण, शिशु, बालक, किशोर और प्रौढ़ शामिल हैं। यह एक सतत बाह्य तथा आंतरिक परिवर्तन है जिसको देखा जा सकता है और एक सीमा तक मापा भी जा सकता है। इन परिवर्तनों में कुछेक तो स्वाभाविक होते हैं और कुछ अस्वाभाविक या कृत्रिम। जो स्वाभाविक परिवर्तन हैं उनको मनोविज्ञान में परिपक्वन (Maturation) कहा जाता है। कृत्रिम या बाह्य वातावरण से प्रभावित होकर बालक में जो परिवर्तन होता है उसे अभिवृद्धि और विकास कहते हैं। बालक के संपूर्ण विकास को समझने के लिए उसकी विभिन्न अवस्थाओं के विकास की विशिष्टाएँ ये हैं। क. बालक का व्यक्ति ख. विकास के सिद्धांत विकास की संकल्पना, विकास के कारण, विकास की गति, विकास में परिवर्तन, विकास की विशेषताएँ ग. बालक की अवस्थाएँ शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, गामक तथा सामाजिक घ. आंतरिक अवयवों का विकास, मस्तिष्क, हृदय, माँसपेशियाँ तथा श्वसन तंत्र ड. बालक में संज्ञानात्मक विकास तथा च. बाल विकास का शैक्षिक पक्ष।